अष्टम सर्ग

सम्राट् रघु राजनीति से सन्यास लेकर तपोवन में चले जाते हैं। इस सर्ग में कवि ने बड़ी कुशलता से अज के राज्य तथा उनके पिता रघु के संन्यास की तुलना की है। कुछ काल के पश्चात रघु योग-समाधि द्वारा अपना शरीर त्याग देते हैं और अज से दशरथ नामक पुत्र उत्पन्न होता है। अज पर भीषण विपत्ति आती है। उनकी रानी इन्दुमती पर स्वर्ग से पुष्पों की माला टूट कर गिरती है और उसकी तत्काल मृत्यु हो जाती है। इस सर्ग के उत्तरार्द्ध में अज के विलाप का वर्णन है जो सम्पूर्ण रघुवंश में उच्चकोटि का काव्यांश माना जाता है।

नवम सर्ग

इस सर्ग से लेकर 15 सर्ग तक रघुवंश की कथा वाल्मीकि की रामायण की कथा से बहुत मिलती है। जब युवराज दशरथ वर्महर अर्थात् शस्त्र धारण करने के योग्य हुए तब अज ने उन्हें राजा नियुक्त किया और स्वयं ''प्रायोपवेशन'' अर्थात् आमरण व्रत आरम्भ कर दिया। इस सर्ग में दशरथ के आखेट का बड़ा ही भव्य वर्णन है जिससे उन्होंने भूल से किसी अन्धे मुनि के पुत्र श्रवण कुमार को मार दिया। अपने पुत्र की मृत्यु पर दु:खी होकर अन्धे मुनि ने शाप दिया कि राजा दशरथ की भी वृद्धावस्था में पुत्र-वियोग के दु:ख में मृत्यु होगी।

दशम सर्ग

दशरथ ने पुत्र-प्राप्ति के उद्देश्य से 'पुत्रेष्टि' यज्ञ आरम्भ कर दिया। इसी अवधि में देवताओं ने भगवान् विष्णु से रावण को नष्ट करने की प्रार्थना की। अत: भगवान विष्णु ने दशरथ के पुत्र के रूप में पृथ्वी पर अवतार लेने का निश्चय किया।

एकादश सर्ग

इस सर्ग में श्रीराम के शैशव का वर्णन है। वे और लक्ष्मण दोनों भाई दुष्ट राक्षसों से यज्ञ की रक्षा करने के लिए मुनि विश्वामित्र के साथ जाते हैं। मार्ग में श्रीराम ताड़का राक्षसी को मारते हैं और विश्वामित्र से अनेक प्रकार के गुप्त अस्त्र प्राप्त करते हैं। विश्वामित्र के यज्ञ के सफलतापूर्वक समाप्त हो जाने पर श्री राम राजा जनक की नगरी मिथिला की ओर प्रस्थान करते हैं और मार्ग में शाप के कारण पत्थर की बनी हुई गौतम की पत्नी अहिल्या का उद्धार करते हैं। मिथिला पहुंचकर राम शिव का विशाल धनुष तोड़ने में अपना पराक्रम दिखाकर बदले में जनक-पुत्री सीता का पाणिग्रहण करते हैं। तब राजा दशरथ को मिथिला में बुलाया जाता है और अन्य पुत्रों

लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुध्न का जनक तथा उनके भ्राता कुशध्वज की पुत्रियों के साथ बड़ी धूमधाम से विवाह होता है। विवाह के बाद जब दशरथ अपने परिवार के साथ मिथिला से अयोध्या लौट रहे होते हैं तब मार्ग में उनकी परशुराम से भेंट होती है जो अपने इष्टदेव शिव के धनुष-भंग का समाचार सुनकर आग-बबूला हो इसका बदला लेने के लिए उद्यत होते हैं। तब राम मदमत्त परशुराम के गर्व को नष्ट कर उन्हें नम्रता का पाठ पढ़ाते हैं तथा अपने विष्णु होने का प्रमाण देते हैं। इसके बाद लोग सुरक्षित तथा प्रसन्न अयोध्या लौटते हैं।

द्वादश सर्ग

इस सर्ग में घटनाओं की भरमार है क्योंकि इसमें रामायण के पांच काण्डों की घटनाओं को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। दशरथ ने यह जानकर कि अब वृद्धावस्था आ पहुंची है राम का यौवराज्याभिषेक करके उन्हें अयोध्या का राज-पाट सौंपना चाहा। परन्तु दशरथ की अभिलाषा पर उस समय पानी फिर गया जब कैकेयी ने दशरथ से राम का वनवास और भरत का राज्याभिषेक मांगा। राम 14 वर्ष के लिए वनवास को चले गये और वहां रावण ने सीता का अपहरण कर लिया। सुग्रीव और हनुमान जैसे वानरों की सहायता से राम ने अन्य राक्षसों सहित रावण का वध किया और अग्नि द्वारा सीता को पवित्र घोषित कर दिये जाने पर उन्होंने उसे पुनः स्वीकार कर लिया।

त्रयोदश सर्ग

इस सर्ग और विगत सर्ग (12) में इस दृष्टि से वैषम्य है कि जहां पिछले सर्ग में घटनाओं की भरमार है वहां इस सर्ग में केवल एक ही घटना का विशद चित्रण है और यह घटना है: राम, लक्ष्मण और सीता के आकाश मार्ग से विमान द्वारा लंका से अयोध्या तक की यात्रा। वर्णन की दृष्टि से इस सर्ग का अत्यधिक महत्त्व है। इस सर्ग में समुद्र का, प्रयाग में गंगा-यमुना नदियों के संगम का तथा जनस्थान से तपोवनों का वर्णन अत्यन्त मोहक है और कालिदास की संवेदना जमकर खिली है।

चतुर्दश सर्ग

अयोध्या लौटकर राम अपनी विधवा माता से मिलते हैं। राम के राज्याभिषेक के उपलक्ष्य में अयोध्या में कुछ समय के लिए फिर उत्सवों की धूम मच जाती है। परन्तु हर्ष और उल्लास की यह बहार अधिक समय तक नहीं रहती क्योंकि राम को जब अपने गुप्तचर से ज्ञात होता है कि अयोध्या के (एक) धोबी नागरिक को सीता के चरित्र पर, रावण के घर में उसके निवास करने के कारण, सन्देह है तो उन्हें विवश होकर न चाहते हुए भी सीता

का परित्याग करना पड़ता है। इस व्यवहार से सीता को अपने जीवन के प्रति गहरी अरुचि हो जाती है। परन्तु फिर भी आत्महत्या न कर इसलिए जीवित रहना चाहती है क्योंकि उसके गर्भ में राम की वंशधर सन्तान है। वन में परित्यक्ता दु:खी सीता को वाल्मीकि सान्त्वना देते हैं और उसे अपने आश्रम में ले जाते हैं। वहां सीता, समय आने पर जुड़वां बालकों (लव और कुश) को जन्म देती है।

पंचदश सर्ग

बारहवें सर्ग के समान यह सर्ग भी घटनाओं से भरा पड़ा है। सर्ग के आरम्भ में यमुना तट के निवासी ऋषि-मुनि, दुष्ट 'लवण' से अपनी रक्षा करने के लिए राम से प्रार्थना करते हैं। तब राम द्वारा नियुक्त शत्रुघ्न 'लवण' का वध कर देते हैं। अयोध्या में किसी ब्राह्मण बालक की अकाल मृत्यु हो जाती है और उस बालक को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से राम को शूद्र होने पर भी तप करते हुए शम्बूक शूद्र की हत्या करनी पड़ती है। राम अश्वमेघ यज्ञ करते हैं जिसमें राम के पुत्र, कुश और लव उपस्थित होते हैं जो वाल्मीकि द्वारा रचित 'राम-कथा' गाकर सुनाते हैं। वाल्मीकि और राम के आग्रह करने पर सीता प्रजा के सामने उपस्थित होती है किंतु तभी पृथ्वी माता से प्रार्थना करती है कि यदि उसका (सीता का) चरित्र निष्कलंक और पवित्र है तो वह (पृथ्वी)अपनी गोद में स्थान दे दे। सीता की इच्छा पूर्ण होती है और वह पृथ्वी की गोद में समा जाती है। इस घटना से राम अत्यंत व्यथित हो उठते हैं और वे अपने राज्य को अपने तथा भाइयों के पुत्रों में विभक्त कर साकेतधाम चले जाते हैं। राक्षसों के नाश का उनका लक्ष्य पूरा हो गया। यहीं पर कथावस्तु का मुख्य भाग सम्पूर्णता को प्राप्त करता है।

पोडश सर्ग

इस सर्ग में घटनाओं का उलटा क्रम चलता है। सूर्यवंश के यशस्वी राजाओं की उज्जवल परम्परा का पर्यवसान होने से सूर्यवंश का पतन प्रारम्भ हो जाता है। राम के पुत्र कुश, जिन्होंने अयोध्या के बदले कुशावती को अपनी राजधानी बनाया एक दिन स्वप्न में अयोध्या नगरी की अधिष्ठाती देवी को अपने सम्मुख खड़ा देखते हैं जो उन्हें बताती है कि कुशावती के राजधानी बन जाने से अयोध्या नगरी की दशा बहुत बुरी हो गई है। अत: कुश फिर अयोध्या को अपनी राजधानी बना लेते हैं। एक बार सरयू नदी में जल क्रीड़ा करते हुए कुश के हाथ का कंकण जल में गिरकर खो जाता है। सर्पों के राजा कुमुद कुश को कंकण लौटाते हुए अपनी बहन कुमद्वती को भी उसे अर्पित कर देते हैं।

सप्तदश सर्ग

इस सर्ग में कुमद्वती से उत्पन्न कुश के पुत्र 'अतिथि' राजा के सफल शासन का बहुत विस्तृत वृतान्त है।

अष्टादश सर्ग

इस सर्ग में अनेक राजाओं का उल्लेख आता है परन्तु उनके नाम को गिनाने के सिवाय उनके विषय में और कुछ नहीं कहा गया है।

एकोनविंशति सर्ग

इसमें रघुकुल के अन्तिम सम्राट् अग्निवर्ण का वर्णन है जो अत्यन्त विषयासक्त और स्त्री लम्पट होने के कारण क्षय रोग से पीड़ित होकर मर जाता है।

.....इति.....